

जिवाजिव पुं. (तद्.) चकोर पक्षी।

जिवाना स.क्रि. (देश.) जिलाना, जीवित करना, जिंदा करना।

जिष्णु वि. (तत्.) जीतने वाला, जेता, विजयी पुं. (तत्.) 1. विष्णु 2. इंद्र 3. अर्जुन 4. सूर्य 5. वस्तु।

जिस सर्व. (तद्.) 'जो' का तिर्यक रूप जैसे- जिस लड़के को जिस स्थान पर बिठाओ, बैठ जाएगा।

जिस्म पुं. (फा.) देह, शरीर।

जिस्मानी वि. (अर.) शरीर संबंधी, शारीरिक।

जिस्मी वि. (अर.) दे. जिस्मानी।

जिहाज पुं. (देश.) जहाज़, रेगिस्तान का जहाज़- ऊँट।

जिहाद पुं. (अर.) 1. धर्म के लिए युद्ध, धार्मिक युद्ध 2. वह लड़ाई जो मुसलमान लोग दूसरे धर्म वालों से अपने धर्म-प्रचार के लिए किया करते हैं। मुहा. जिहाद का झंडा- वह पताका जो मुसलमान लोग दूसरे धर्मावलंबियों से युद्ध करने के लिए लेकर चलते थे; जिहाद का झंडा खड़ा करना- धर्म या मज़हब के नाम पर लड़ाई करना।

जिहादी वि. (अर.) जिहाद करने वाला।

जिहालत स्त्री. (अर.) अज्ञानता, मूर्खता।

जिहासा स्त्री. (तत्.) त्याग करने की इच्छा।

जिहासु वि. (तत्.) त्याग करने का इच्छुक।

जिहीर्षा स्त्री. (तत्.) हरने या हरण करने की इच्छा, लेने की इच्छा।

जिहीर्षु वि. (तत्.) हरण करने की इच्छा रखने वाला।

जिह्म पुं. (अर.) बुद्धि, धारणा, समझ मुहा. जिह्म खुलना- बुद्धि का विकास होना, समझ होना, या आना; जिह्म लड़ाना- सोचना, बुद्धि दौड़ाना।

जिह्माक्ष वि. (तत्.) ऐंछा, भेंगा।

जिहमित वि. (तत्.) घूमा हुआ, घिरा हुआ।

जिह्व पुं. (तद्.) जीभ, जिह्वा।

जिह्वक पुं. (तत्.) एक प्रकार का रोग जिसमें जीभ में काँटे पड़ जाते हैं।

जिह्वल वि. (तत्.) चटोरा, चट्ट, जिमला।

जिह्वा स्त्री. (तत्.) 1. जीभ, रसना 2. आग की लपट।

जिह्वाग्र पुं. (तत्.) जीभ का आगे का भाग, जीभ की नोक। वि. 1. जीभ के अगले भाग पर स्थित 2. अच्छी तरह याद किया हुआ, कंठस्थ मुहा. जिह्वाग्र करना- जबानी याद कर लेना, कंठस्थ कर लेना; जिह्वाग्र होना- जबानी याद होना।

जिह्वाप वि. (तत्.) जीभ से पानी पीने वाला प्राणी जैसे- कुत्ता, घोड़ा आदि।

जिह्वा मल पुं. (तत्.) जीभ पर जमा हुआ मैल।

जिह्वा मूल पुं. (तत्.) जीभ का पिछला स्थान या जीभ की जड़, जीभ का मूल या प्रारंभ का अंश।

जिह्वा रोग पुं. (तत्.) जीभ का रोग।

जिह्वा लोलुप वि. (तत्.) जीभ का चटोरा।

जिह्विका स्त्री. (तत्.) जीभी, जीभ साफ करने की वस्तु।

जिह्वोल्लेखनिका स्त्री. (तत्.) जीभी।

जिह्वोल्लेखनी स्त्री. (तत्.) जीभी।

जिह्म वि. (तत्.) 1. टेढ़ा, वक्र 2. क्रूर, दुष्ट प्रकृति वाला 3. कपटी, कुटिला पुं. 1. अधर्म 2. कपट 3. बेईमानी 4. नगर का फूल।

जिह्मग पुं. (तत्.) 1. सर्प, साँप 2. बाण, तीर वि. टेढ़ा-तिरछा चलने वाला 2. धूर्त, कपटी, छली 3. मंद गति से चलने वाला।

जीगन पुं. (देश.) जुगनू।

जी पुं. (तद्.) 1. मन, चित्त, दिल 2. तबीयत 3. हिम्मत, जीवट 4. विचार, संकल्प 5. चाह मुहा. जी उकताना- चित्त न लगना, ऊब जाना; जी अच्छा होना- नीरोग होना; जी उचटना- चित्त न लगना, मन हटना; जी का जंजाल- झंझट; जी काँपना- डर लगना, कलेजा धक-धक करना; जी उदास हो जाना- मन खिन्न होना; जी घबराना- चित्त में व्यग्रता होना, व्याकुल होना अव्य. 1. सम्मानसूचक शब्द वि. (अर.) वाला, सहित प्रयो. जी शऊर- 1. तमीज़दार 2. समझदार।